अथैकोनविंशत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः

अभिषेकमन्त्राः

पुष्कर उवाच

राजदेवाद्यभिषेकमन्त्रान्वक्ष्येऽघमर्दनान्। कुम्भात्कुशोदकैः सिञ्चेत्तेन सर्वं हि सिद्ध्यति।।१।।
सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः। वासुदेवः संकर्षणः प्रद्युम्नश्चानिरुद्धकः।।२।।
भवन्तु विजयायैत इन्द्राद्या दश दिग्गजाः। रुद्रो धर्मो मनुर्दक्षो रुचिः श्रद्धा च सर्वदा।।३।।
भृगुरत्रिर्वशिष्ठश्च सनकश्च सनन्दनः। सनत्कुमारोऽङ्गिराश्च पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः।।४।।
मरीचिः कश्यपः पातु प्रजेशं पृथिवीपतिम्। प्रभासुरा बर्हिषद अग्निष्वात्ताश्च पान्तु ते।।५।।
क्रव्यादाश्चोपहूताश्च आज्यपाश्च सुकालिनः। अग्निभिश्चाभिषिञ्चन्तु लक्ष्म्याद्या धर्मवल्लभाः।।६।।
आदित्याद्याः कश्यपस्य बहुपुत्रस्य वल्लभाः। कृशाश्वस्याग्निपुत्रस्य भार्याश्चारिष्टनेमिनः।।७।।
अश्विन्याद्याश्च चन्द्रस्य पुलहस्य तथा प्रियाः। भूता च कपिशा दंष्ट्री सुरसा सरमा दनुः।।८।।
श्येनी भासी तथा क्रौञ्ची धृतराष्ट्री शुकी तथा। एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु अरुणश्चार्कसारथिः।।९।।
आयतिर्नियती रात्रिर्निद्रा लोकस्थितौ स्थिताः। उमा मेना शची पान्तु धूमोर्णा निर्ऋतिर्जया।।१०।।

अध्याय-२१९

अभिषेकार्थ मन्त्र विचार

पुष्करजी ने कहा कि–अधुना मैं राजा और देवता आदि के अभिषेक सम्बन्धी मन्त्रों का वर्णन करने जा रहा हूँ, जो सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाले हैं। कलश से कुशयुक्त जल द्वारा राजा का अभिषेक करना चाहिये; इससे सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है।।१।।

उस समय निम्नांकित मन्त्रों का पाठ करा चाहिये–'हे राजन्! ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि सम्पूर्ण देवता आपका अभिषेक करें। भगवान् वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, इन्द्र आदि दस दिक्पाल, रुद्र, धर्म, मनु, दक्ष, रुचि तथा श्रद्धा–ये सभी सदा आपको विजय सम्प्रदान करने वाले हों। भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, अङ्गिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, मरीचि और कश्यप आदि ऋषि महर्षि प्रजा का शासन करने वाले भूपति की रक्षा करें। अपनी प्रभा से प्रकाशित होने वाले 'बर्हिषद्' और 'अग्निष्वात्त' नाम वाले पितर आपका पालन करें। क्रव्याद (राक्षस), आवाहन किये हुए आज्यपा (घृतपान करने वाले देवता और पितर), सुकाली (सुकाल लाने वाले देवता) तथा धर्मप्रिया लक्ष्मी आदि देवियाँ प्रवृद्ध अग्नियों के साथ आपका अभिषेक करें। अनेकों पुत्रों वाले प्रजापति, कश्यप के आदित्य आदि प्रिय पुत्रगण, अग्निनन्दन कृशाश्व तथा अरिष्टनेमि की पत्नियाँ भी आपका अभिषेक करें। चन्द्रमा की अश्विनी आदि भार्याएँ, पुलह की प्रिय पत्नियाँ और भूता, कपिशा, दंष्ट्री, सुरसा, सरमा, दनु, श्येनी, भाषी, क्रौञ्ची, धृतराष्ट्री तथा शुकी आदि देवियाँ एवं सूर्य के सारभि अरुण–ये सब तुम्हारे अभिषेक का कार्य सम्पन्न करें। आयति, नियति, रात्रि, निद्रा, लोकरक्षा में तत्पर रहने वाली उमा, मेना और शची आदि देवियाँ, धूमा, ऊर्णा, नैर्ऋती, जया, गौरी, शिवा, ऋद्धि,

गौरी शिवा च ऋद्धिश्च वेला या चैव नड्वला। असिक्नी च तथा ज्योत्स्ना देवतन्यो वनस्पतिः॥११॥
महाकल्पश्च कल्पश्च मन्वन्तयुगानि च। संवत्सराणि वर्षाणि पान्तु त्वामयनद्वयम्॥१२॥
ऋतवश्च तथा मासाःपक्षा रात्र्यहनी तथा। सन्ध्यातिथिमुहूर्ताश्च कालस्यावयवाश्च ये॥१३॥
सूर्याद्याश्च ग्रहाः पान्तु मनुः स्वायंभुवादिकः। स्वयम्भुवः स्वारोचिष उत्तमस्तामसो मनुः॥१४॥
रैवतश्चाक्षुषः षष्ठो वैवस्वत इहेरितः। सावर्णिब्रह्मपुत्रश्च धर्मपुत्रश्च रुद्रजः॥१५॥
दक्षजो रौच्यभौत्यौ च मनवस्तु चतुर्दश। विश्वभुक्च विपश्चिच्च सुचितिश्च शिखी विभुः॥१६॥
मनोजवस्तथौजस्वी बलिरद्भुतशान्तयः। वृषश्च ऋतधामा च दिवस्पृक्कविरिन्द्रकः॥१७॥
रैवन्तश्च कुमारश्च तथा वत्सविनायकः। वीरभद्रश्च नन्दी च विश्वकर्मा पुरोजवः॥१८॥
एते त्वामभिषिञ्चन्तु सुरमुख्याः समागताः। नासत्यौ देवभिषजौ ध्रुवाद्या वसवोऽष्ट च॥१९॥
दश चाङ्गिरसो वेदास्त्वाऽभिषिञ्चन्तु सिद्धये। आत्मा ह्यायुर्मनो दक्षो मदः प्राणस्तथैव च॥२०॥
हविष्मांश्च गरिष्ठा च ऋतः सत्यश्च पान्तु वः। क्रतुर्दक्षो वसुः सत्यः कालकामो धुरिर्जये॥२१॥
पुरूरवा अद्रिवाश्च विश्वेदेवाश्च रोचनः। अङ्गारकाद्याः सूर्यस्त्वां निर्ऋतिश्च तथा यमः॥२२॥
अजैकपादहिर्बुध्न्यो धूमकेतुश्च रुद्रजाः। भरतश्च तथा मृत्युः कापालिरथ किङ्किणिः॥२३॥
भवनो भावनः पान्तु स्वजन्यः स्वजनस्तथा। क्रतुश्रवाश्च मूर्धा च याजनोऽभ्युशनास्तथा॥२४॥
प्रसवश्चाव्ययश्चैव दक्षश्च भृगवः सुरा। मनोनुमन्ता प्राणश्च नवोऽपानश्च वीर्यवान्॥२५॥
वीतिहोत्रो नयः सांध्यो हंसो नारायणोऽवतु। विभुश्चैव प्रभुश्चैव देवश्रेष्ठा जगद्धिताः॥२६॥
धाता मित्रोऽर्मया पूषा शक्रोऽथ वरुणो भगः। त्वष्टा विवस्वान्सविता विष्णुर्द्वादशभास्कराः॥२७॥

वेला, नड्वला, असिक्नी, ज्योत्स्ना, देवाङ्गनाएँ तथा वनस्पति–ये सब आपका पालन करें।।२-११।। 'महाकल्प, कल्प, मन्वन्तर, युग, संवत्सर, वर्ष, दोनों अयन, ऋतु, मास, पक्ष, रात-दिन, संध्या, तिथि, मुहूर्त तथा काल के विभिन्न अवयव (छोटे-छोटे भेद) आपकी रक्षा करें। सूर्य आदि ग्रह और स्वायम्भुव आदि मनु आपकी रक्षा करे। स्वायम्भुव, स्वारोचिष, श्रेष्ठतम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, ब्रह्मपुत्र, धर्मपुत्र, रुद्रपुत्र, दक्षपुत्र, रौच्य तथा भौत्य-ये चौदह मनु तुम्हारे रक्षक हों। विश्वभुक्, विपश्चित्, शिखी, विभु, मनोजव, ओजस्वी, बलि, अद्भुत शान्तियाँ, वृष, ऋतधामा, दिवःस्पृक्, कवि, इन्द्र, रैवन्त, कुमार कार्तिकेय, वत्सविनायक, वीरभद्र, नन्दी, विश्वकर्मा, पुरोजव, देववैद्य अश्विनीकुमार तथा ध्रुव आदि आठ वसु–ये सभी प्रधान देवता यहाँ पदार्पण करक तुम्हारे अभिषेक का कार्य सम्पन्न करें। अङ्गिरा के वंश में उत्पन्न दस देवता और चारों वेद सिद्धि के लिये आपका अभिषेक करें। आत्मा, आयु, मन, दक्ष, मद, प्राण, हविष्मान्, गरिष्ठ, ऋत और सत्य–ये आपकी रक्षा करें तथा क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काल, काम और धुरि–ये आपको विजय सम्प्रदान करें। पुरूरवा, आर्द्रवा विश्वेदेव, रोचन, अङ्गारक (मंगल) आदि ग्रह, सूर्य, निर्ऋति तथा यम–ये सब आपकी रक्षा करें। अजैकपाद, अहिर्बुध्न्य, धूमकेतु, रुद्र के पुत्र, भरत, मृत्यु, कापालि, किंकणि, भवन, भावन, स्वजन्य, स्वजन, क्रतुश्रवा, मूर्धा, याजन और उशना–ये आपकी रक्षा करें। प्रसव, अव्यय, दक्ष, भृगुवंशी ऋषि, देवता, मनु, अनुमन्ता, प्राण, नव, बलवान् अपान वायु, वीतिहोत्र, नय, साध्य, हंस, विभु, प्रभु और नारायण-संसार के हित में लगे रहने वाले ये श्रेष्ठ देवता आपका पालन करें। धाता, मित्र, अर्यमा, पूषा, शक्र, वरुण, भग,

एकज्योतिश्च द्विज्योतिस्त्रिश्च (च) तुर्ज्योतिरेव च। एकशक्रो द्विशक्रश्च त्रिशक्रश्च महाबलः।।२८।।
इन्द्रश्च मेत्यादिशतु ततः प्रतिमकृत्तथा। मितश्च संमितश्चैव अमितश्च महाबलः।।२९।।
ऋतजित्सत्यजिच्चैव सुषेणः सेनजित्तथा। अतिमित्रोऽनुमित्रश्च पुरुमित्रोऽपराजितः।।३०।।
ऋतश्च ऋतवाग्धाता विधाता धारणो ध्रुवः। विधारणो महातेजा वासवस्य परः सखा।।३१।।
ईदृक्षश्चाप्यदृक्षश्च एतादृगमिताशनः। क्रीडितश्च सदृक्षश्च सरभश्च महातपाः।।३२।।
धर्ता धुर्यो धुरिर्भीम (?) अभिमुक्तोऽक्षपात्सहः। धृतिर्वसुरनाधृष्यो रामः कामो जयो विराट्।।३३।।
देवा एकोनपञ्चाशन्मरुतस्त्वामवन्तु ते। चित्राङ्गदश्चित्ररथश्चित्रसेनश्च वै कलिः।।३४।।
ऊर्णायुरुग्रसेनश्च धृतराष्ट्रश्च नन्दकः। हाहाहूहूर्नारदश्च विश्वावसुश्च तुम्बुरुः।।३५।।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु गन्धर्वा विजयायते। पान्तु ते मुनयो मुख्या दिव्याश्चाप्सरसां गणाः।।३६।।
अनवद्या सुकेशी च मेनका सहजन्यया। क्रतुस्थला घृताची च विश्वाची पुञ्जिकस्थला।।३७।।
प्रम्लोचा चोर्वशी रम्भा पञ्चचूडा तिलोत्तमा। चित्रलेखा लक्ष्मणा च पुण्डरीका च वारुणी।।३८।।
प्रह्लादो विरोचनाऽथ बलिर्बाणोऽथ तत्सुतः। एते चान्येऽभिषिञ्चन्तु दानवा राक्षसास्तथा।।३९।।
हेतिश्चैव प्रहेतिश्च विद्युत्स्फूर्जथुरग्रकाः। यक्षः सिद्धात्मकः पातु मणिभद्रश्च नन्दनः।।४०।।
पिङ्गाक्षो द्युतिमांश्चैव पुष्पवन्तो जयावहः। शङ्खः पद्मश्च मकरः कच्छपश्च निधिर्जये।।४१।।
पिशाचा ऊर्ध्वकेशाद्या भूता भूम्यादिवासिनः। महाकालं पुरस्कृत्य नरसिंहं च मातरः।।४२।।
गुहः स्कन्दो विशाखस्त्वां नैगमेयोऽभिषिञ्चतु। डाकिन्यो याश्च योगिन्यः खेचराभूचराश्च याः।।४३।।
गरुडश्चारुणः पान्तु संपातिप्रमुखाः खगाः। अनन्ताद्या महानागाः शेषवासुकितक्षकाः।।४४।।

त्वष्टा, विवस्वान्, सविता, भास्कर और विष्णु–ये द्वादश सूर्य आपकी रक्षा करें। एकज्योति, द्विज्योति, त्रिज्योति, चतुर्ज्योति, एकशक्र, द्विशक्र, महाबली त्रिशक्र, इन्द्र पतिकृत्, मित, सम्मित, महाबली अमित, ऋतमित्र, अनुमित्र, पुरुमित्र, अपराहित, ऋत, ऋतवाक्, धाता, विधाता, धारण, ध्रुव, इन्द्र के परम मित्र महातेजस्वी विधारण, इदृक्ष, अदृक्ष, एतादृक्, अमिताशन, क्रीडित, अदृक्ष, सरभ, महातपा, धर्ता, धुर्य्य, धुरि, भीम, अभिमुक्त, अक्षपात, सह, धृति वसु, अनाधृष्य, राम, काम, जय और विराट्–ये उन्चास मरुत् नामक देवता आपका अभिषेक करें तथा आपको लक्ष्मी सम्प्रदान करें। चत्रिाङ्गद, चित्ररथ, चित्रसेन, कलि, ऊर्णायु, उग्रसेन, धृतराष्ट्र, नन्दक, हाहा, हूहू, नारद, विश्वासु और तुम्बुरु–ये गन्धर्व तुम्हारे अभिषेक का कार्य सम्पन्न करें और आपको विजयी बनावें। प्रधान–प्रधान मुनि तथा अनवद्या, सुकेशी, मेन का, सहजन्या, क्रतुस्थला, घृताची, विश्वाची पुञ्जिकस्थला, प्रम्लोचा, उर्वशी, रम्भा, पञ्चचूड़ा, तिलोत्तमा, चित्र लेखा, लक्ष्मणा, पुण्डरीका और वारुणी–ये दिव्य अप्सराएँ आपकी रक्षा करें।।१२-३८।।

"प्रह्लाद, विरोचन, बलि, बाण और उसका पुत्र–ये तथा दूसरे-दूसरे दानव और राक्षस तुम्हारे अभिषेक का कार्य सिद्ध करें। हेति, प्रहेति, विद्युत् स्फूर्जथु, अग्रक, यक्ष, सिद्ध, मणिभद्र और नन्दन–ये सब आपकी रक्षा करें। पिङ्गाक्ष, द्युतिमान्, पुष्पवन्त, जयावह, शङ्ख, पद्म, मकर और कच्छप–ये निधियाँ आपको विजय सम्प्रदान करें। ऊर्ध्वकेश आदि पिशाच, भूमि आदि के निवासी भूत और माताएँ, महाकाल एवं नृसिंह को आगे करके आपका पालन करें। गुह, स्कन्द, विशाख, नैममेय–ये आपका अभिषेक करें। भूतल एवं आकाश में विचरने वाली डाकिनी तथा

ऐरावतो महापद्मः कम्बलाश्वतरावुभौ। शङ्खः कर्कोटकश्चैव धृतराष्ट्रो धनञ्जयः॥४५॥
कुमुदैरावणौ पद्मः पुष्पदन्तोऽथ वामनः। सुप्रतीकाञ्जनो नागाः पान्तु त्वां सर्वतः सदा॥४६॥
पैतामहस्तथा हंसो वृषभः शंकरस्य च। दुर्गासिंहश्च पान्तु त्वां यमस्य महिषस्तथा॥४७॥
उच्चैःश्रवाश्चाश्वपतिस्तथा धन्वन्तरिः सदा। कौस्तुभः शङ्खराजश्च व्रजं शूलं च चक्रकम्॥४८॥
नन्दकोऽस्त्राणि रक्षन्तु धर्मश्च व्यवसायकः। चित्रगुप्तश्च दण्डश्च पिङ्गलो मृत्युकालकौ॥४९॥
बालखिल्यादिमुनयो व्यासवाल्मीकिमुख्यकाः। पृथुर्दिलीपो भरतो दुष्यन्तः शत्रुजिद्बली॥५०॥
मनुः ककुत्स्थश्चानेना युवनाश्वो जयद्रथः। मान्धाता मुचकुन्दश्च पान्तु त्वां च पुरूरवाः॥५१॥
वास्तुदेवाः पञ्चविंशत्तत्त्वानि विजयाय ते। रुक्मभौमः शिलाभौमः पातालो नीलमूर्तिकः॥५२॥
पीतरक्तः क्षितिश्चैव श्वेतभौमो रसातलम्। भूर्लोकोऽथ भुवर्मुख्या जम्बूद्वीपादयः श्रिये॥५३॥
उत्तराः कुरवः पान्तु रम्यो हिरण्यकस्तथा। भद्राश्वः केतुमालश्च वर्षश्चैव बलाहकः॥५४॥
हरिवर्षः किंपुरुष इन्द्रद्वीपः कशेरुमान्। ताम्रवर्णो गभस्तिमान्नागद्वीपश्च सौम्यकः॥५५॥
गान्धर्वो वारुणो यश्च नवमः पातु राज्यदः। हिमवान्हेमकूटश्च निषधो नील एव च॥५६॥
श्वेतश्च शृङ्गवान्मेरुर्माल्यवान्गन्धमादनः। महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमानृक्षवान्गिरिः॥५७॥
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च गिरयः शान्तिदास्तु ते। ऋग्वेदाद्याः षडङ्गानि इतिहासपुराणकम्॥५८॥
आयुर्वेदश्च गान्धर्वधनुर्वेदोपवेदकाः। शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं ज्योतिषां गतिः॥५९॥
छन्दोऽङ्गानि च वेदाश्च मीमांसा न्यायविस्तरः। धर्मशास्त्रं पुराणं च विद्याह्येताश्चतुर्दश॥६०॥

योगिनियाँ, गरुड, अरुण तथा सम्पाति आदि पक्षी आपका पालन करें। अनन्त आदि बड़े-बड़े नाग, शेष, वासुकि, तक्षक ऐरावत, महापद्म, कम्बल, अश्वतर, शङ्ख, कर्कोटक, धृतराष्ट्र, धनंजय, कुमुद, ऐरावत, पद्म, पुष्पदन्त, वामन, सुप्रतीक तथा अञ्जन नामक नाग सदा और सभी तरफ से आपकी रक्षा करें। ब्रह्माजी का वाहन हंस, देवाधिदेव भगवान् श्रीशिवशंकर का वृषभ, भगवती दुर्गा का सिंह और यमराज का भैंसा—ये सभी वाहन आपका पालन करें। अश्वराज उच्चैःश्रवा, धन्वन्तरि वैद्य, कौस्तुभ मणि, शङ्खराज पाञ्चजन्य, वज्र, शूल, चक्र और नन्दक खड्ग आदि अस्त्र आपकी रक्षा करें। दृढ़ निश्चय रखने वाले धर्म, चित्रगुप्त, दण्ड, पिङ्गल, मृत्यु, काल, वालखिल्य आदि मुनि, व्यास और वाल्मीकि आदि महर्षि, पृथु, दिलीप भरत, दुष्यन्त, अत्यन्त बलवान् शत्रुजित् मनु, ककुत्स्थ, अनेना, युवनाश्व, जयद्रथ, मान्धाता, मुचुकुन्द और पृथ्वीपति पुरूरवा—ये सब राजा तुम्हारे रक्षक हों। वास्तुदेवता और पच्चीस तत्त्व आपकी विजय के साधक हों। रुक्मभौम, शिलाभौम, पाताल, नीलमूर्ति, पीतरक्त, क्षिति, श्वेतभौम, रसातल, भूर्लोक, भुवर् आदि लोक तथा जम्बूद्वीप आदि द्वीप आपको राज्यलक्ष्मी सम्प्रदान करें। उत्तरकुश्रु, रम्य, हिरण्यक, भद्राश्व, केतुमाल, बलाहक, हरिवर्ष, किंपुरुष, इन्द्रद्वीप, कशेरमान्, ताम्रवर्ण, गभस्तिमान्, नागद्वीपा, सौम्यक, गान्धर्व, वारुण और नवम आदि वर्ष आपकी रक्षा करें और आपको राज्य सम्प्रदान करने वाले हों। हिमवान्, हेमकूट, विषध, नील, श्वेत, शृङ्गवान्, मेरु, माल्यवान्, गन्धमादन, महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान, ऋक्षवान् गिरि, विन्ध्य और पारियात्र—ये सभी पर्वत आपको शान्ति सम्प्रदान करें। ऋक् आदि चारों वेद, छहों अङ्ग, इतिहास, पुराण, आयुर्वेद, गान्धर्ववेद और धनुर्वेद आदि उपवेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्यौतिष, छन्द—ये षड् अङ्ग, चार वेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण—ये चौदह विद्याएँ आपकी रक्षा करें॥३९-६०॥

सांख्यं योगः पाशुपतं वेदा वै पञ्चरात्रकम्। कृतान्तपञ्चकं ह्येतद्गायत्री च शिवा तथा।।६१।।
दुर्गा विद्या च गान्धारी पान्तु त्वां शान्तिदाश्च ते। लवणेक्षुसुरासर्पिर्दधिदुग्धजालब्धयः।।६२।।
चत्वारः सागरः पान्तु तीर्थानि विविधानि च। पुष्करश्च प्रयागश्च प्रभासो नैमिषः परः।।६३।।
गयाशीर्षो ब्रह्मशिरस्तीर्थमुत्तरमानसम्। कालोदको नन्दिकुण्डतीर्थं पञ्चनदस्तथा।।६४।।
भृगुतीर्थं प्रभासं च तथा चामरकण्टकम्। जम्बूमार्गश्च विमलः कपिलस्य तथाऽऽश्रमः।।६५।।
गङ्गाद्वारकुशावर्तौ विन्ध्यको नीलपर्वतः। वराहपर्वतश्चैव तीर्थं कनखलं तथा।६६।।
कालंजरश्च केदारो रुद्रकोटिस्तथैव च। वाराणसी महातीर्थं बदर्याश्रम एव च।।६७।।
द्वारकाश्रीगिरिस्तीर्थं तीर्थं च पुरुषोत्तमः। शालग्रामोऽथ वाराहः सिन्धुसागरसंगमः।।६८।।
फल्गुतीर्थं विन्दुसरः करवीराश्रमस्तथा। नद्यो गङ्गासरस्वत्यः शतद्रुर्गण्डकी तथा।।६९।।
अच्छोदा च विपाशा च वितस्ता देविका नदी। कावेरी वरुणा चैव निश्चिरा गोमती नदी।।७०।।
पारा चर्मण्वती रूपा मन्दाकिनी महानदी। तापी पयोष्णी वेणा च गौरी वैतरणी तथा।।७१।।
गोदावरी भीमरथी तुङ्ग भद्राऽरणी तथा। चन्द्रभागा शिवा गौरी अभिषिञ्चन्तु पान्तु च।।७२।।

।।इत्यादिमहापुराणे भगवान् वेदव्यासकृत श्रीविष्णुवामपादस्वरूपे श्रीअग्निमहापुराणान्तर्गति अभिषेकमन्त्रकथनं नामैकोनविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः।।२१९।।



सांख्य, योग, पाशुपत, वेद, पाञ्चरात्र–ये 'सिद्धान्तपञ्चक' कहलाते हैं। इन पाँचों के अतिरिक्त गायत्री, शिवा, दुर्गा, विद्या तथा गान्धारी नाम वाली देवियाँ आपकी रक्षा करें और लवण, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध तथा जल से भरे हुए समुद्र आपको शान्ति सम्प्रदान करें। चारों समुद्र और विविध तरह के तीर्थ आपकी रक्षा करें। पुष्कर, प्रयाग, प्रभास, नैमिषारण्य, गयाशीर्ष, ब्रह्मशिरतीर्थ, उत्तरमानस, कालोदक, नन्दिकुण्ड, पञ्चनदतीर्थ, भृगुतीर्थ, अमरकण्टक, जम्बूमार्ग, विमल, कपिलाश्रम, गङ्गाद्वार, कुशावर्त, विन्ध्य, नीलगिरि, वराह पर्वत, कनखल तीर्थ, कालञ्जर, केदार, रुद्रकोटि, महातीर्थ वाराणसी, बदरिकाश्रम, द्वारका, श्रीशैल, पुरुषोत्तमतीर्थ, शालग्राम, वाराह, सिन्धु और समुद्र के संगम का तीर्थ, फल्गुनीर्थ, विनदुसर, करवीराश्रम, गङ्गानदी, सरस्वती, शतद्रु, गण्डकी, अछोदा, विपाशा, वितस्ता, देविका नदी, कावेरी, वरुणा, निश्चिरा, गोमती नदी, पारा, चर्मण्वती, रूपा, महानदी, मन्दाकिनी, तापी, पयोष्णी, वेणा, वैतरणी, गोदावरी, भीमरथी, तुङ्गभद्रा, अरणी, चन्द्रभागा, शिवा तथा गौरी आदि पवित्र नदियाँ आपका अभिषेक और पालन करें।।६१-७२।।

।।इस प्रकार महापुराणों में श्रेष्ठ श्रीविष्णुवामपादस्वरूप कृष्णद्वैपायन भगवान् व्यासकृत अग्निमहापुराणान्तर्गत आगत विषयों का विवेचन सम्बन्धी दो सौ ऊन्नीसवाँ अध्याय डॉ. सुरकान्त झा द्वारा सुसम्पन्न हुआ।।२१९।।

